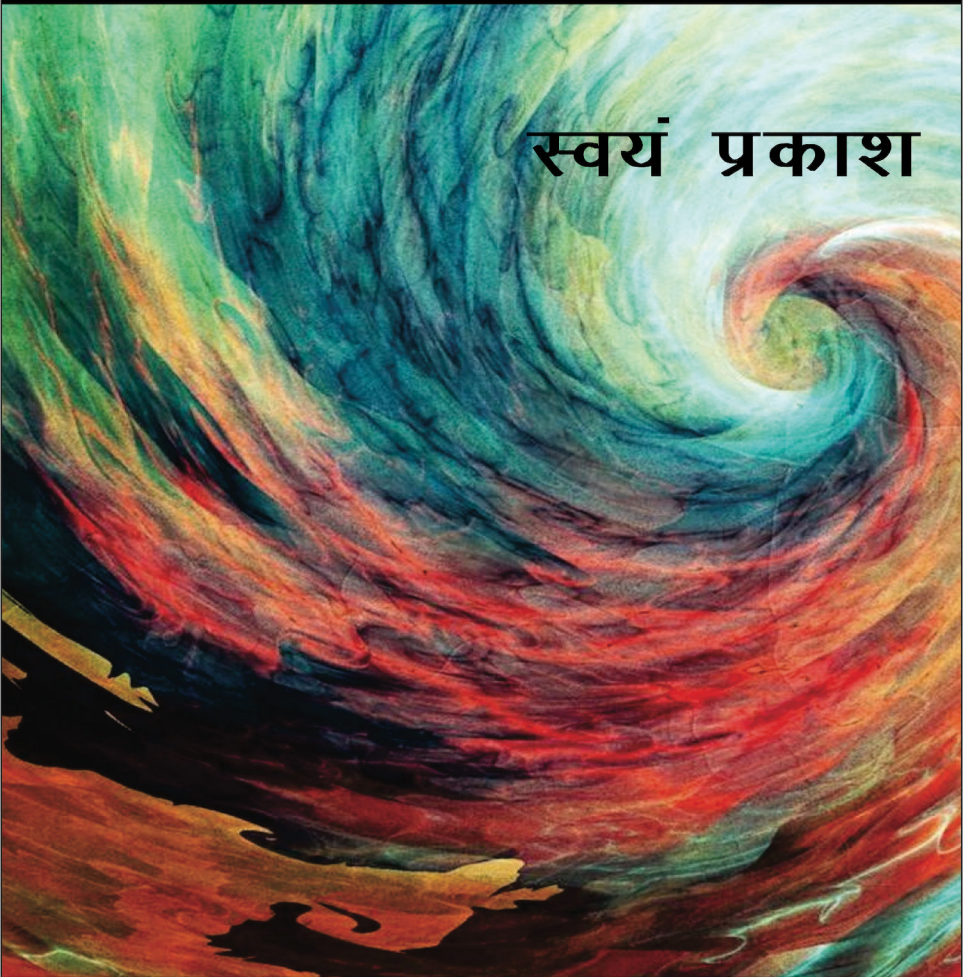


नाचनेवाली कहानी

स्वयं प्रकाश



नाचनेवाली कहानी



स्वयं प्रकाश

हांफते-हड़बड़ाते युवा खोजी पत्रकार मित्र ने कमरे में प्रवेश किया। बोला-बहुत शानदार स्कूप मारकर लाया हूँ। एक कप गरम-गरम कॉफी मिल जाये, तो समाचार फोड़ने का मजा आ जाये। पत्नी चुपचाप उठकर भीतर गयीं और चार गिलास पानी ले आयीं। अब वह गटागट दो गिलास पानी पियेगा, तीसरे को जाम की तरह हाथ में पकड़कर बैठ जाएगा और अपना समाचार फोड़ेगा। पत्नी इस बीच कॉफी बना लाएगी। लेकिन आज उसने ऐसा नहीं किया। यानी आधा किया, आधा नहीं किया। पानी पी लिया, जाम उठा लिया पर किस्सा शुरू नहीं किया। चुपचाप बैठा परपीड़न सुख के साथ मेरी उत्सुकता का मजा लेता रहा।

आखिर जब कॉफी आ गयी तो उसका किस्सा शुरू हुआ। किस्सा कुछ यों था-जैसलमेर और बाड़मेर के बीच एक कस्बा है जिसका नाम है 'नाचना'। पंद्रह-बीस हजार की आबादी है। वहाँ से कोई बस आती है, तो लोग कहते हैं 'नाचनेवाली बस आ गयी' या 'नाचनेवाली सवारियाँ उतर गयीं' वगैरह। बोलचाल में ऐसा ही चलता है। इमजेंसी के दिन थे। एक दिन दिल्ली से गुप्तचर विभाग का एक अधिकारी जोधपुर से होता हुआ जैसलमेर पहुँचा। रात हो चुकी थी। वह सीधे थाने पहुँच गया। थाने के मुख्य द्वार पर खड़े सिपाही से उसने पूछा- 'थानेदार साहब हैं?'

सिपाही ने जवाब दिया- 'थानेदार साहब तो नाचने गये है।'

चतुर गुप्तचर अधिकारी को मालूम था कि इस तरह अम्मल घालने का रिवाज है। कोई अजब नहीं जो सिपाही थोड़ा पिनक में हो। उसने पूछा- 'भीतर कौन हैं?' जवाब मिला- 'मुंशीजी हैं।'

इतना काफी था। गुप्तचर अधिकारी भीतर गया और मुंशीजी को अपना परिचय दिया। मुंशी ने अपने ही थाने में अपनी ही कुरसी से खड़े होकर एक तरह से उसे 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया और उससे बिराजने को कहा। आपातकाल है। क्या पता। कोई भरोसा नहीं। भेरूजी रक्षा करें। कहाँ बापड़ा जैसलमेर-देश की पिछाड़ीतुल्य...और कहाँ ठेठ दिल्ली! और थाने में इस समय दुर्योग से इंचार्ज कौन? तो मुंशीजी।

गुप्तचर अधिकारी ने पूछा- 'डिप्टी साहब कौन हैं? राठौड़?'

-‘होकमा!’

-‘कहाँ हैं?’

-‘डिप्टी साहब तो होकम नाचने पधारे हैं।’

गुप्तचर अधिकारी की तयोरियाँ चढ़ीं। यहाँ तक अफीम का असर? सो भी ऑन ड्यूटी। उसने पूछा-‘और एसपी साहब?’

-‘होकम! एसपी साहबह भी नाचने पधारे हैं।’

-‘कहाँ गये हैं नाचने?’ गुप्तचर अधिकारी ने डांटकर पूछा।

-‘होकम नाचने।’

अब माथा मारना बेकार था। खीझा हुआ गुप्तचर अधिकारी चुपचाप उठकर बाहर आ गया और सर्किट हाउस की तरफ चल पड़ा। रास्ते में ठंडी हवा लगी, तो भेजा थोड़ा ठिकाने आया। सोचा जैसलमेर पर्यटन स्थल है। देश-विदेश के पर्यटक आते हैं। इधर-उधर उनके मनोरंजन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। दूसरे क्या, खुद सरकार करती है। सका टूरिज्म डिपार्टमेंट और करता क्या है? और वह जानता है कि इन कार्यक्रमों में शराब भी चलती है और नाच-गाना भी। आसपास के लोक कलाकारों को बुलवा लिया जाता है। वे विदेशी गोरों के मनोरंजन के लिए नाचते-गाते हैं। नहीं, उनके मनोरंजन के लिए नहीं, अपनी आजीविका के लिए। तो इसमें हर्ज ही क्या है? और वह जानता है ऐसी नाच-गाना पार्टियों में ऐसे उन्माद का वातावरण पैदा कर दिया जाता है कि विदेशी सैलानी भी उठ-उठकर नाचने लगें और उनकी देखादेखी देसी सैलानी भी। धींगामस्ती ही तो करनी है। उसके लिए इंडिया से बेहतर जगह कौन सी होगी?

...तो होगी कोई पार्टी-शार्टी दस-बीस किलोमीटर दूर कहीं धोरों में या किसी रिसॉर्ट या हवेली या किसी खंडहर महलनुमा होटल में। और किसी लाटसाहब का कोई मेहमान आया होगा तो एसपी, डीएसपी भी चले गये होंगे। लेकिन दिस इज इंप्रॉपर। कल इसकी पूरी तफतीश करनी पड़ेगी।